वन्दना

वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजा की अर्चना ॥

पथ मिला जिनसे हमें है, न्याय का और धर्म का ।
सत्यता के अनुभवों से, प्रेरणा मिली प्रेरणा ॥
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजा की अर्चना ॥
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।

पूर्वजों की कामनाएँ, फल रहीं सच हो रहीं ।
जी रहे हैं सुख से वंशज, है रही यही कामना ॥
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजा की अर्चना ॥
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।

आओ गायें हम सभी, मंगलमयी सुख-शान्ति गीत ।
हम है क्या? हमने है जाना, है यही पहचानना ॥
अर्चना के सरल स्वरों से, पूर्वजा की अर्चना ॥
वन्दना के सहज स्वरों से, प्रेरकों की वन्दना ।

विवाह

(13)

मानवीयतापूर्ण

परिवार परम्परा के अर्थ में

विवाह-संस्कार

चि० गणेश व आयु० अर्चना

दिनांक - 5 जुलाई 1999

स्थान - लायंस भवन, गुढ़ियारी चौक
रायपुर (म०प्र०)

समय - 11.30AM - 1.30PM.
विवाह संस्कार - ... भाई
- 1.30pm - 4pm भोजन

कुल अतिथि - लगभग - 500.

100 ...

उत्सव गीत

जन-जन होंगे प्रसन्न, सभी उत्सव मनाएँगे।
प्रिवार में होगा न्याय-शान्ति, उत्सव मनाएँगे ॥

गाँवों में मानव शिक्षा का अवसर सबको होगा।
व्यवयास होंगे मानवीय, स्वावलम्बन होगा ॥
धर्म में होगा समाधान, उत्सव मनाएँगे।
जन-जन होंगे प्रसन्न, सभी उत्सव मनाएँगे।

ग्रामों के सहअस्तिव से ही, सुन्दर राष्ट्र बनेगा।
सुख-समृद्धि से ओत-प्रोत यह स्वर्णिम राष्ट्र बनेगा ॥
सत्य होगा प्रामाणिक, उत्सव मनाएँगे।
जन-जन होंगे प्रसन्न, सभी उत्सव मनाएँगे ॥

राष्ट्र मिलकर विश्वकल्पना को साकार करेंगे।
विश्व बन्धेगा स्नेह सूत्र में, स्नेहित सभी रहेंगे ॥
स्वराज्य होगा अभयपूर्ण, उत्सव मनाएँगे।
जन-जन होंगे प्रसन्न, सभी उत्सव मनाएँगे।

वन्दना

वन्दना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ॥

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की ॥
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरन्तरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ॥

सबको है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी ?
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी ॥
श्रद्धा समर्पित जिनसे आये, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ॥

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना ॥
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा ॥

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

वर-वधू द्वारा -

१. हमें मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान के रूप में अस्तित्व दर्शन, जीवन ज्ञान एवं मानवीयता पूर्ण आचरण में जागृत होने का अवसर मिला है। इस प्रसन्नता में, से, के लिये हम स्वयं को अर्पित करते हैं।

२. इस समृद्ध पृथ्वी पर मानव कुल के अंगभूत हमें सह अस्तित्व में प्रमाणित होने का तथा विवेक व विज्ञान से संपन्न होने का अवसर हमें मिला है। इस प्रसन्नता में,से, के लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं ।

३. इस समृद्ध पृथ्वी पर सार्वभौम व्यवस्था में जागृत होने और भागीदार होने का अवसर हमें प्राप्त हुआ है। इस प्रसन्नता में,से, के लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं।

४. इस समृद्ध पृथ्वी पर अखण्ड समाज तथा सार्वभौम व्यवस्था सहज ही समाधान, समृद्धि, अभय और सह-अस्तित्व प्रमाणित करने का हमें अवसर मिला है। इस प्रसन्नता में, से के लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं।

विवाह संस्कार

१. विधि - उपस्थित लोगों को आसन ग्रहण **करने के लिए निवेदन,** वर-कन्या अलग अपने अपने माता पिता के **साथ बैठेंगे ।**

२. शुभकामना-भूमि स्वर्गताम् यातु, मनुष्यो यातु देवताम् ।
धर्मो सफलताम् यातु, नित्यम् यातु शुभोदयम् ॥

३. वन्दना एवं मंगल कामना - (संलग्न)

४. स्वागत - मानवीयता पूर्ण विवाह संस्कार **में आप सब की** भागीदारी के लिए आपका स्वागत है।

५. मानवीय विवाह संस्कार का सार-संक्षेप -

प्रबोधन-विवाह-संस्कार की **महिमा, आवश्यकता** व स्वरूप, सम्बन्ध सहित परस्पर परिचय, उभय **पक्ष की स्वीकृति** एवं संकल्प, माल्यार्पण, प्रतिज्ञा, प्रबोधन- **कर्तव्यों व दायित्वों** का बोध, जीवन का लक्ष्य। प्रसन्नता को अभिव्यक्त **करने के** लिए संगीत, वाद्य, आशीर्वाद, भोज आदि।

५.१ प्रबोधन - मानवीय संस्कार का **स्वरूप व व्याख्या,** विवाह का औचित्य, विवाह संस्कार **की महिमा एवं परम आवश्यकता** । मानव क्या है ? मानवीयता **क्या है** ?

५.२ संबंध सहित परस्पर परिचय - विवाह **मंडप में सम्बन्ध सहित** परस्पर परिचय - वर-वधू के माता-पिता, **दादी-दादा, मामी-मामा, नानी-नाना,** ताऊ-ताई, चाचा-चाची, **मौसा-मौसी, बुवा-फूफा, भाभी-भइया, बहन-** बहनोई, **मित्र, गुरू व बच्चों, भाई-बहन** आदि का परिचय। वर-वधू का शैक्षणिक **व्यक्तित्व, जागृति क्रम ।**

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

1

(१) विवाह संस्कार स्थली अलंकृत वधु वर सत्यासीन पंडित मण्डप समेत होना सुगंधित [illegible] रहना -
वधु वर पोशाक सभी आगमन [illegible]
[illegible] .

(२) - [illegible] परस्पर [illegible]

(३) [illegible] पुष्पमाला [illegible] परस्पर [illegible] ।

(४) - परस्पर [illegible] अपने [illegible] को
[illegible] सहित [illegible]
[illegible] उपकार
[illegible] के [illegible]
[illegible] - दोनों [illegible]
[illegible] अभिभावक [illegible]
[illegible] के [illegible]
[illegible] सम्पन्न है।
इसी [illegible]
वधु वर [illegible] के अभिभावक
[illegible] - परस्पर [illegible]
[illegible] -

2

(१) मैं अपने अभिभावकों एवं [illegible] पत्नी/पति [illegible] के जीने का प्रेरणा [illegible] इसे शरीर यात्रा पर्यन्त । निर्वाह करूंगा - । करूंगी -

(२) [illegible] - मैं समाधान [illegible] परिवार में विश्वास पूर्वक जीता रहूँ इसे शरीर यात्रा पर्यन्त प्रमाणित करूंगा करूंगी -

(३) मैं [illegible] दो शरीर एक मन के साथ जीऊँ। निश्चय [illegible] शरीर यात्रा पर्यन्त प्रमाणित करूंगा करूंगी -

(४) मैं [illegible] मानसिकता [illegible] अनुमोदित [illegible]
रूप में [illegible] निर्वाह करने का । निश्चय करता हूँ इसे [शुभ के साथ] शरीर यात्रा पर्यन्त निर्वाह करूंगा करूंगी

(५) मैं [illegible] व्यवस्था में जीना [illegible] निश्चय है इसे शरीर यात्रा पर्यन्त जीने में प्रमाणित करूंगा करूंगी

१. चि0. .... एवं आयु0..........................
को पति-पत्नी के रूप में स्वीकार करते हैं।

२. मानवीयता पूर्ण आचरण द्वारा पति-पत्नी के सम्बन्ध को निर्वाह करने के लिए हम चि0 .... एवं आयु0 .... को संरक्षण एवं प्रोत्साहन निरन्तर प्रदान करते रहेंगे।

प्रतिज्ञा के बाद मंगल गीत - (संलग्न)

५.६ प्रबोधन - प्रतिज्ञा की महिमा, व्याख्या, मानव का उद्देश्य, दायित्व एवं कर्तव्य का बोध भले प्रकार से कराना। विवाह संस्कार पूर्ण हुआ, इसकी घोषणा।

५.७ आशीर्वाद -

५.७.१ बुजुर्गो द्वारा - आप दोनों (वर-वधु) दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, तेजस्वी हों, ओजस्वी हों और हर दिन, हर पल आपका कार्य-व्यवहार मानवता के लिए, जीवन तृप्ति के लिए चरितार्थ होता रहे। समृद्धि, समाधान, अभय और सहअस्तित्व सदा बना रहे।

५.७.२ समान आयु वर्ग द्वारा - आपका दाम्पत्य सम्बन्ध हम लोगों के लिए प्रेरक हो, मार्गदर्शक हो, सार्थक हो एवं सुखद, सुन्दर समाधान पूर्ण हो।

५.७.३ छोटी आयु वर्ग द्वारा - आप हमारे मार्ग दर्शक रहेंगें, पथ प्रदर्शक रहेंगे, शुभचिन्तक रहेंगे, साथ ही सहयोग करने वाले रहेंगे, हम सब आप जैसे ही सुखद, सुन्दर, समाधान पूर्ण पद्धति से जीना चाहते हैं।

इसके पश्चात् सभी वर-वधू के ऊपर पुष्प वर्षा करें।

५.८ इस प्रसन्नता को अभिव्यक्त करने के लिए सर्वमान्य उपक्रम यथा - नृत्य, गायन एवं भोज आदि करते हैं।

६. मंगलगीत एवं वन्दना- (संलग्न)।

७. प्रणाम एवं आशीर्वाद -

वर-वधू एवं माता-पिता आचार्य (पुरोहित) का प्रणाम करें। वर-वधू एवं माता-पिता मानव परम्परा में ज्ञान (विद्या) के स्रोत व्यक्तियों को प्रणाम करें।

अखंड मानव समाज की अपेक्षा में आशीर्वाद - गुरू एवं आचार्य द्वारा।

८. सभी उपस्थित जनों द्वारा★-

इस मानवीयता पूर्ण विवाह संस्कार में भागीदारी निर्वाह करने का हमें अवसर प्राप्त हुआ, इसके लिए हमें कृतज्ञता एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हम सब सफलता के लिए शुभाशीष देते हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

अभिनन्दन गीत

अभिनन्दन है आप सभी का,
इस शुभ पावन अवसर पर ।
जीवन हुआ प्रसन्न आप जो,
आये हैं इस अवसर पर ॥
दूर गाँव से, पास घरों से,
चलकर आये हैं जो भी ।
परिचय पाकर प्रसन्न हुए सब,
इस उत्सव के अवसर पर ॥
आयु भेद हो, वंश भेद हो,
भिन्न-भिन्न स्थान भले हों ।
सब समान हैं मानव जीवन,
मित्र बने इस अवसर पर ॥
जीवन में हर पल उत्सव हो,
प्रयोजन से कार्य सभी ।
नित्य उत्सव से ही मिलेंगे,
हम सब हर एक अवसर पर ॥

के रूप में स्वीकार करती हूँ और स्वयं को (वर का नाम) की पत्नी के रूप में प्रस्तुत करती रहूँगी ।

२. मैं (वधू का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपने पति (वर का नाम) के साथ सह-अस्तित्व का निर्वाह निरन्तर करती रहूँगी ।

३. मैं (वधू का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपने पति (वर का नाम) के साथ परस्पर पूरकता का निर्वाह निरन्तर करती रहूँगी ।

४. मैं (वधू का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपने पति (वर का नाम) के साथ मानवीय सम्बन्ध का निरन्तर निर्वाह करती रहूँगी ।

५. मैं (वधू का नाम) अपने पति (वर का नाम) के साथ मानवीय व्यवस्था के लिए जीऊँगी ।

५.५.३ वर-वधू द्वारा सम्मिलित प्रतिज्ञा -

१. हम दम्पत्ति प्रतिज्ञा करते हैं कि शरीर यात्रा पर्यन्त मानव कुल को जागृति पथ में प्रशस्त करने के कार्य में भागीदार रहेंगे ।

२. हम दोनो मानवीयता पूर्ण मर्यादाओं का पालन करेंगे । जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ का सदुपयोग एवं सुरक्षा करते हुए मानवीयता पूर्ण आचरण में जीयेंगे ।

५.५.४ उपस्थित जन समूह द्वारा प्रतिज्ञा -

हम आज दिनांक (शेष पूर्ववत) में आयोजित इस विवाह मंडप में सहर्ष स्वेच्छा पूर्वक प्रतिज्ञा करते हैं कि -

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

इस विवाह मंडप में आप सब की साक्षी में दाम्पत्य सम्बन्ध को जानकर और मानकर स्वेच्छा पूर्वक सहर्ष प्रतिज्ञा करता हूँ कि -

१. अपने परिवार जनों एवं बन्धु-बांधवों द्वारा समर्थित (वधू का नाम) को शरीर यात्रा पर्यन्त अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करता हूँ और स्वयं को (वधू का नाम) के पति रूप में प्रस्तुत करता रहूँगा।

२. मैं (वर का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ सह-अस्तित्व का निर्वाह निरन्तर करता रहूँगा।

३. मैं (वर का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ परस्पर पूरकता का निर्वाह निरन्तर करता रहूँगा।

४. मैं (वर का नाम) जीवन, शरीर एवं धन रूपी अर्थ के द्वारा अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ मानवीय सम्बन्ध का निरन्तर निर्वाह करता रहूँगा।

५. मैं (वर का नाम) अपनी पत्नी (वधू का नाम) के साथ साथ मानवीय व्यवस्था के लिए जीऊंगा।

५.५.२ वधू द्वारा प्रतिज्ञा -

मैं (वधू का नाम) आज दिनांक (शेष पूर्ववत्) में आयोजित इस विवाह मंडप में आप सब की साक्षी में दाम्पत्य सम्बन्ध को जानकर व मानकर स्वेच्छा पूर्वक सहर्ष प्रतिज्ञा करती हूँ कि -

१. अपने परिवारजनों एवं बन्धु-बांधवों द्वारा समर्थित (वर का नाम) को शरीर यात्रा पर्यन्त अपने पति

मंगल कामना

जन्म लिया जिस पर हमने, इस जन्म-भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

माँ की ममता में लक्ष्य हो, जीवन को जागृत करना।
शिशु पोषण-संरक्षण को, तन-मन-धन से पूरा करना॥
आचरण में हो उदारता, मातृ-भूमि पर मंगल हो॥
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

पथ-प्रदर्शकों के प्रति, कृतज्ञता का भाव रहे।
जीवन विद्या स्रोत हेतु, मन में श्रद्धा का भाव रहे॥
आचरण में हो मानवता, पुण्य भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

विशेष से हम सहज होकर, प्रेम मूल्य अभिव्यक्त करें।
जीवन रूप में सब समान हैं, सर्व समक्ष यह व्यक्त करें॥
जागृत हों सब मानव जीवन, विश्व भूमि पर मंगल हो।
कार्य करें हम मिलकर शुभ के, कर्म-भूमि पर मंगल हो॥

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

कामना गीत

कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर।
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर॥

जागृति में हो सहायक, सबकी पूरकता परस्पर।
जीवनं हो सब पूर्ण जागृत, प्रसन्नता हो नित निरन्तर॥
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर।
कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर॥

परिवार मानव हो प्रमाणित, न्याय तृप्तता हो सभी में।
सम्बन्धों में मूल्य प्रमाणित, हो शान्तिमयता नित निरन्तर॥
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर।
कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर॥

हो गया समीचीन है अब, प्रतीक्षारत थे वर्षों से हम।
जीवन जागृति का संकल्प हो, दिव्यता हो नित निरन्तर॥
न्यायता हो, धर्मता हो, सत्यता हो नित निरन्तर।
कामना है हमने की यह, पूर्णता हो नित निरन्तर॥

हम इन दोनों को सम्मिलित रूप से पुत्र पुत्री के रूप में स्वीकार करते हैं, हमारा आशीर्वाद निरन्तर इनके साथ बना रहेगा। वर-वधू माता पिता के चरण स्पर्श करें।

माता-पिता को प्रणाम अर्थात समस्त मानव परम्परा (इतिहास) को प्रणाम अर्थात माता पिता के साथ ही दादा-दादी, नाना-नानी, ताऊ-ताई, चाचा-चाची, मौसी-मौसा, मामी-मामा, बुवा-फूफा, भईया-भाभी, बहन-बहनोई सभी को अभिवादन किया।

५.३.२ माता-पिता का आशीर्वाद -

चि0...................... एवं आयु0 .... की यह युगल जोडी दीर्घायु हो, स्वस्थ्य रहे, तेजस्वी रहे, ओजस्वी रहे और हर दिन हर पल इनका कार्य-व्यवहार मानवता के लिए, जीवन तृप्ति के लिए चरितार्थ होता रहे। समाधान, समृद्धि, अभय और सह अस्तित्व को ये प्रमाणित करें, ऐसा हमारा आशीष है।

५.४ माल्यार्पण -

वर के भाई-बहन-मित्र तथा कन्या के भाई-बहन एवं मित्र उन उन को माला अर्पित करें। वर-वधू खडे हो जायें। पहले वधू, वर के गले में माला अर्पित करेगी। फिर वर, वधू के गले में माला अर्पित करेगा।

समस्त मंडप सहित - अभिनंदन गीत और उत्सव गीत (संलग्न)

५.५ प्रतिज्ञा -

५.५.१ वर द्वारा प्रतिज्ञा :-

मैं (वर का नाम) आज दिनांक (शेष पूर्ववत्) में आयोजित

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

५.३ उभयपक्ष की स्वीकृति एवं संकल्प -

वर-वधू के माता पिता उन उन के पास आये । माता, पिता व वर-वधू खड़े हो जाये ।

५.३.१ दोनों के माता पिता से बुलवाये -

हम चि0(वर का नाम) के माता पिता, हम आयु0 (कन्या का नाम) के माता पिता शिशु काल से ममता पूर्वक तन, मन, धन से इनका पोषण, संरक्षण एवं सुशीलता का संर्वधन करते आये हैं। इनके ज्ञानार्जन को समृद्ध करने के लिए शिक्षा आदि को वहन करते आये हैं। हमें प्रसन्नता है कि ये दोनों मानव परिवार परम्परा के दायित्व को निर्वाह करने योग्य हो गये हैं। हम और हमारा सम्पूर्ण परिवार स्नेही जनों सहित इस दाम्पत्य सम्बन्ध से पूर्णतया शुभाकांक्षा सहित सहमत हैं। चि0 (वर का नाम)व आयु0(कन्या का नाम) मानवीयता के संरक्षण में सहायक हो। यह नव दम्पत्ति शरीर यात्रा पर्यन्त मानवीयता, देव मानवीयता एवं दिव्य मानवीयता पूर्वक जी कर मानव परम्परा में अपने प्रमाण प्रस्तुत करें। ऐसी हमारी मंगल कामना एवं शुभाशीष है.

हम आज दिनांक ,........................ माह .... वर्ष .... दिन................ तदनुसार विक्रम सम्वत् .... पक्ष .... तिथि .... सौर मास .... प्रविष्ट नक्षत्र .... में समय .... स्थान .... ग्राम/नगर .... जनपद .... प्रदेश .... देश .... में आयोजित इस विवाह मंडप में आप सब की साक्षी में इन दोनों को दाम्पत्य सूत्र में बांधते हैं एवं विश्वास दिलाते हैं कि अब

★ **सम्मिलित उच्चारण** - अर्पित करते हैं - अर्पित हैं ।

१. व्यापक शून्यावकाश में स्थित अनन्त ब्रह्माण्डों में से एक ब्रह्माण्डों के अंगभूत इस समृद्ध पृथ्वी पर, वर्तमान में पाये जाने वाले मानव अत्यन्त सौभाग्य शाली हैं क्योंकि उनको विकास एवं जागृति का अध्ययन एवं अनुभव करने का स्वर्णिम अवसर व साधन प्राप्त हैं। इस प्रसन्नता में, से , के लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं ।

२. इस समृद्ध पृथ्वी पर पदार्थावस्था, प्राणावस्था एवं जीवावस्था के साथ हम सब को अपने में स्वयं स्फूर्त होने वाले कर्तव्यों व दायित्वों को पूरा करने का अवसर मिला है। इस प्रसन्नता में, से , के लिए स्वयं को अर्पित करते हैं ।

३. इस समृद्ध पृथ्वी पर अपने माता पिता एवं बन्धु - बांधवों के साथ सुरक्षित एवं संरक्षित रहकर कर्त्तव्यों एवं दायित्वों का बोध हमें प्राप्त हुआ है। इस प्रसन्नता में, से, के लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं ।

४. हमें इस समृद्ध पृथ्वी पर शुभ, सुन्दर व समाधान पूर्ण पद्धति, प्रणाली एवं नीति से पारंगत होने का शुभ अवसर मिला है। इसे इस पीढ़ी एवं अगली पीढ़ियों में प्रमाणित करने में पूर्ण विश्वास हुआ है। इस प्रसन्नता में,से, के, लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं ।

५. हम इस समृद्ध पृथ्वी पर सुदुर विगत से प्राप्त न्याय, धर्म एवं सत्य कामना की स्मृति पाकर उपकारान्वित हुए हैं, इसे स्वीकारते हुए कृतज्ञता को अभिव्यक्त करने की प्रसन्नता में, से के लिए हम स्वयं को अर्पित करते हैं।

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

उभय पक्ष

① इसी अर्थ में रचना दोनों पक्ष के -
अभिभावक, बन्धुजनों और मित्रों समेत
सत्यापन सार्थक होने का आशीर्वचन
समान भावों सम्पादन हेतु उपकारणीय होने के
सहित हर्षोल्लास ।।
का आश्वासन के सम्पादन समारोह में प्रेरणा
होने के उद्गार समर्पित दर्शा सकते हैं -
शुभकामना गीत - रचना शुभ अवसर
2) कृपया विवाह - बन्धु बांधवों के द्वारा
पुष्प वर्षा —
3) प्रीति भोज